शोध–प्रस्तावना

हिन्दी विषय में पीएच.डी उपाधि हेतु

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का तात्विक विवेचन

शोध निर्देशक : | शोधार्थी :

Jv’n डॉ. निरूपमा हर्षवर्धन | भारती सिंह

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबन्धन एवं मानविकी संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर, भारत

2017

प्रपत्र शोध कार्य

शोध विषय का परिचय –

नाटक हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण विद्या है। नाटक काव्य का एक रूप है। जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाटक का दृश्य काव्य कहते हैं। नाट्यशास्त्र में लोक चेतना को नाटक के लेखन और मंचन की मूल प्रेरणा माना गया है।

नाटक में नाटक शब्द की मूल धातु नट् है संस्कृत में नट् शब्द का अर्थ–नाचने वाला या अभिनेता 'नट' का अर्थ 'नर्तक' था। नट से जब नाट्य शब्द बना तो उसका अर्थ नृत्य करना हो गया। इस प्रकार कह सकते है कि 'नाट्य' का अर्थ किसी भी प्रस्तुति को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करना है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में 'नाट्य' के विषय में लिखा है कि –

''योऽयं स्वभावों लोकस्य सुख–दुःख समन्वितः
सोऽऽाघामिनयोयतो   नाटयमित्यभिघीयते''

कहने का तात्पर्य है कि सुख और दुख से मिश्रित (या युक्त) जो लोक प्रवृतियाँ (स्वभाव) है। वही आंगिक आदि अभिनय से युक्त होकर नाट्य कहलाती है।

अतः अवस्थानुरूप अनुकरण या स्वाँग का नाम ही अभिनय है। अभिनय चार प्रकार का होता है–आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक। अंगो की चेष्टा से जो अभिनय किया जाता है वह आंगिक, वचनों अर्थात संवाद के माध्यम से जो अभिनय किया जाता है वह वाचिक, वेशभूषा के माध्यम से अभिनय

किया जाता है उसे आहार्य तथा भावों के उद्रेक से कंप, स्वेद आदि द्वारा जो होता है उसे सात्विक कहते है।

हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिशचन्दं से माना जाता है। हिन्दी में अव्यावसायिक साहित्यिक रंगमंच के निर्माण का श्री गणेश आगहसन 'अमानत' 'लखनवी' के 'इंदर सभा' नामक गीति रूपक से माना जाता है।

नाटक मानव जीवन की अनुकृति है। मनुष्य के भावो विचारों संवेदना आदि को अभिव्यक्त करने की समस्त और प्रभावशाली विद्या नाटक है। नाटकों के माध्यम से हम लोग जीवन में मनोरंजन के साथ उसने जीवन की समस्त विसंगतियों की प्रवृतियों का भी चित्रण करते है।

लक्ष्मीनारायण लाल (1927—1887) हिन्दी नाटककार, एकांकीकार एवं समीक्षक होने के साथ—साथ कहानीकार व उपन्यासकार भी थे। साहित्य की अनेक विधाओं में सृजन करने के बावजूद सर्वाधिक ख्याति उन्हे नाटककार के रूप में मिली। डा0 लाल ने लगभग 35 पूर्णकालिक नाटको की रचना की हैं। उन्होने अपना पहला नाटक 'अंधा कुआँ' सन् 1955 में ही लिखा था। डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में साधारण जीवन के अनुभवनो को किसी गहरे या महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास प्रायः रहता है। पौराणिक ऐतिहासिक परिवेश के साथ ही यथार्थवादी परिवेश, प्रयोगधर्मिता, प्रतीकों तथा बिंबो के सार्थक उपयोग, मानवीय संबंधो—विशेषकर स्त्री पुरूष में संबंधों की जटिलता, उन्मुक्तता तथा बहुस्तरीय स्थितियों के चित्रण आदि ने उनके नाटकों को अपनी धरती और परंपरा से जोड़ा है।

इसलिए मैने ''डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का तात्विक विवेचन'' को अपने शोध का विषय बनाया है। समकालीन हिन्दी नाटकों के प्रमुख नाटककार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल है। मैने डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाट्य साहित्य का गहन अध्ययन किया और अपने शोध प्रबन्ध को सुचारू सुगमता और सफलतापूर्वक सम्पन्न करने हेतु मैंने अथवा शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध को षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत नाट्य साहित्य : भारतीय तथा पाश्चात्य परम्परा पर प्रकाश डाला जायेगा।

द्वितीय अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटक का वातावरण एवं परिवेश के अंतर्गत सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक, सामाजिक परिवेश का अध्ययन किया जायेगा।

तृतीय अध्याय में डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के वस्तु विधान के अंतर्गत नाटकों का कथानक, पात्र–चरित्र चित्रण, उद्धेश्य को उजागर किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय में डॉ0 लाल नाटकों का शिल्प विधान के अंतर्गत प्रतीक, भाषा, संवाद व लोकतत्व पर प्रकाश डाला जायेगा।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत डॉ0 लाल के नाटकों में रंग विधान के अन्तर्गत रंग उत्पादों, द्रशात्मक परिकल्पना व संस्कृत भाषा में कथन को उद्घाटित किया जायेगा और अंत में निष्कर्ष भी दिया जायेगा।

षष्ट अध्याय में डा0 लाल के नाटकों का नाटकीय तत्वो के आधार पर तुलनात्मक विवेचन किया जायेगा। अंत में उपसंहार के अंतर्गत समस्त अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो का मूल्यांन भी किया जायेगा।

आधुनिक काल में विशेषकर साठोत्तर काल में हिन्दी साहित्य के नाटकों पर अनेक शोधार्थियों ने शोध किया है। परंतु हिन्दी साहित्य के नाटकों का तात्विक विवेचन पर स्पष्ट रूप से अभी तक कोई शोध कार्य देखने में नहीं आया है। इस शोध विषय को चुनने का कारण है कि डा0 लाल के नाटकों को आधार मानकर आज की कानून की स्थिति, सत्ता की लालसा, समाज की दिग्भ्रमित स्थिति, सत्ता की लोलुपता तथा लालसा व राजनीति आदि पर प्रकाश डालने के लिये इस विषय को चुना है।

मेरे ,द्वारा शोध कार्य न केवल हिन्दी साहित्य के नाटककारों अर्थात नाट्य रचियताओं के लिये महत्वपूर्ण होगा अपितु नाटक में नाटक के तत्वों की रसानुभूति को समझने वाले सभी सदस्यों के लिए भी महत्वपूर्ण होगा।

इस शोध कार्य को आरंभ करने के लिये मुझे मार्गदर्शक के रूप में आदरणीय डॉ. निरूपमा हर्षवर्धन जी का प्रोत्साहन मिला है उनके विद्वतापूर्ण निर्देशन में ही मैं अपना शोध कार्य आरंभ कर सकूंगी। अतः यह आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि शोध का यह विषय शोध की दृष्टि से भावी शोधकर्ताओ के लिये अत्यंत उपयोगी होगा

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का कृतित्व और व्यक्तित्व

लक्ष्मीनारायण लाल (1927–1987) हिन्दी नाटककार, एकांकीकार एवं समीक्षक होने के साथ–साथ कहानीकार व उपन्यासकार भी थे। साहित्य की अनेक विद्याओं में सृजन करने के बावजूद सर्वाधिक ख्याति उन्हे नाटककार के रूप में ही मिली।

लक्ष्मीनारायण लाल

जन्म : 4 मार्च 1927 जलालपुर बस्ती, उत्तप्रदेश, भारत

मृत्यु : 20 नवम्बर 1987 दिल्ली

कार्यक्षेत्र : नाटककार, एकांकीकार, कहानीकार, उपन्यासकार

राष्ट्रीयता : भारतीय

भाषा : हिन्दी

रचनात्मक परिचय

डॉ0 लाल ने लगभग 35 पूर्णकालिक नाटकों की रचना की उन्होने अपना पहला नाटक 'अंधा कुआं' सन् 1955 में ही लिखा। उनके नाटकों में साधारण जीवन के अनुभवनो को किसी गहरे या महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास प्रायः रहता है। पौराणिक, ऐतिहासिक परिवेश के साथ ही यथार्थवादी परिवेश, प्रयोग धर्मिता प्रतीकों तथा बिंबो का सार्थक उपयोग, मानवीय संबेधों विशेषकर स्त्री–पुरूष संबंधो की जटिलता, उन्मुक्तता तथा

बहुस्तरीय स्थितियों के चित्रण आदि ने उनके नाटको को अपनी धरती और परंपरा से जोड़ा है।

समीक्षा कार्य

बहुमुखी प्रतिभा एवं बहुआयामी कार्य अनुभव के कारण डॉ0 लाल के रंग अनुभव का क्षेत्र भी विस्तृत था। यही कारण है कि नाट्य समीक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान है। उनके समीक्षा ग्रन्थ 'रंगमंच और नाटक की भूमिका' तथा आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच और तीसरी पुस्तक 'पारसी हिन्दी रंगमंच' में पारसी रंगमंच के इतिहास एवं उसके विशेषताओं को रेखांकित किया गया है।

प्रकाशित कृतियाँ

नाटक –

अन्धा कुआँ (1956)

मादा कैक्टस (1959)

सुंदर रस (1959)

सूखा सरोवर (1960)

नाटक तोता मैना (1962)

रात रानी (1962)

दर्पण (1964)

सूर्यमुख (1968)

कलंकी (1969)

मिस्टर अभिमन्यु (1971)

क्फ्र्यु (1972)

दूसरा दरवाजा (1973)

अब्दुल्ला दीवाना (1974)

यक्ष प्रश्न (1976)

व्यक्तिगत (1977)

एक सत्य हरिशचन्द (1979)

सगुन पंछी

सब रंग मोह भंग

राम की लड़ाई

पंच पुरूष

लंका काण्ड

गंगा भाटी

नरसिंह कथा

चन्द्रमा

शोध का उद्देश्य –

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता हैं :–

(1) डॉ0 लाल के नाट्य साहित्य के आधार पर स्त्री और पुरूषों के सम्बन्धों का अन्वेषण करना।

(2) नाट्य साहित्य के माध्यम से स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों के विभिन्न रूपों का वर्णन करना।

(3) नाट्य साहित्य के माध्यम से लोक जीवन तथा लोक भावनाओं की सजीव झांकी प्रस्तुत करना।

(4) डॉ0 लाल के नाटको में व्यक्तिगत, सामाजिक, पूँजीवाद, जाति–वर्ग–वर्ण, आर्थिक, नैतिक, समाजवादी संघर्ष को उभारना।

(5) डॉ0 लाल के नाटक ''अंधा कुआँ'', सूखा सरोवर, रक्त कमल, कलंकी आदि नाटकों को आधार बनाकर महानगरीय जीवन की विभिन्न विसंगतियों का वर्णन करना।

(6) डॉ0 लाल के नाट्य साहित्य के माध्यम से नारी व शोषण वर्ग के प्रति संवेदना व्यक्त करना।

(7) डॉ0 लाल के नाट्य साहित्य के आधार पर सामाजिक चिन्ताओं की अभिव्यक्ति करना।

(8) समाज, सामाजिक संस्थाओं के टूटन, विघटन एवं खोखलेपन का चित्रण करना।

(9) मानव के जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं, संघर्षो, कठिनाइयों की त्यागपूर्ण झांकी दिखाना।

(10) डॉ0 लाल के नाटकों का आधार बनाकर तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण करना।

(11) समकालीन मानव जीवन के विविध अनुभवों, मानव के अन्तर्मन में छिपे सत्य की खोज करना तथा छिपे हुए सत्य का पता लगाना।

(12) डा0 लाल के नाटकों को आधार बनाकर तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का निदान या समाधान प्रस्तुत करना।

(13) डॉ0 लाल के नाट्य साहित्य को आधार मानकर किसी घटना के साथ सह–संबंध की जानकारी प्राप्त करना।

(14) वैज्ञानिक कार्य विधि के उपयोग द्वारा प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना।

(15) डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का नाटक के तत्वों के आधार पर विवेचन करना।

शोध की विधि :

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए सर्वप्रथम नाटक साहित्य का अध्ययन करना अपेक्षित होगा जिसमें प्राचीन हिन्दी नाटक से लेकर आधुनिक हिन्दी नाटक की विकास यात्रा को सम्यक् प्रकार से समझना आवश्यक होगा।
इसके साथ–साथ साठोत्तरी काल के नाट्य साहित्य में नाटक और नाटक के तत्वों से संबंधित आलोचनात्मक ग्रन्थों का अध्ययन किया जायेगा।

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक के साहित्य का अध्ययन करके नाटक के तत्वों के विभिन्न पहलुओं को समझकर समाज को जानकारी देने का प्रयास किया जायेगा। नाटक के तत्वों के विवेचन से डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के साहित्य का सूक्ष्म गहन अध्ययन करके विषय का विश्लेषण एवं शोध विषय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया जायेगा। इसके साथ ही नाटक के तत्वों से सम्बन्धित अन्य शोध ग्रन्थों, पुस्तकों व अन्य साहित्यिक सामग्री का अध्ययन किया जायेगा।
डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के नाट्य साहित्य का अध्ययन और उस अध्ययन से प्राप्त नाटकों का तात्विक विवेचन के निष्कर्ष इस शोध विषय के प्रमुख आधार रहेंगे। शोध की इस विधि से प्रस्तावित शोध प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण शोध प्रबन्ध बन सकेगा।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व :–

शोध की आवश्यकता :–

(1) ज्ञान के विकास में सहायक

(2) उद्देश्य प्राप्ति के लिये सर्वोत्तम क्रिया।

(3) समाज को नवीन ज्ञान एवं गति प्रदान करना।

(4) जीवन की उद्देश्य की प्राप्ति का सरल उपाय देना।

(5) सुधार में सहायक

(6) सत्य व ज्ञान की खोज करना।

(7) प्रशासनिक क्षेत्र में सफलता प्रदान करना।

(8) अध्यापक के लिये उत्यन्त उपयोगी।

(9) जिज्ञासा मूल प्रकृति की संतुष्टि में सहायक।

(10) सामाजिक विकास में सहायक।

शोध का महत्व :–

(1) शोध हमारे ज्ञान का विस्तार करता है।

(2) अनुसंधान मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है।

(3) भावुकता से परे होकर असली कारणों की खोज की जाती है।

(4) शोध या अनुसंधान विविध विषयों में गहन और सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करता है।

(5) शोध या अनुसंधान ज्ञान के भंडार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।

(6) शोध के बिना ज्ञान और विकास में वृद्वि सभंव नहीं है।

(7) शोध या अनुसंधान सामाजिक विकास में सहायक होता है।

(8) मानव समाज को समस्याओं के हल का रास्ता सुझाता है।

(9) शोध या अनुसंधान से व्यावहारिक समस्याओं का समाधान होता है।

(10) शोध या अनुसंधान अनेक प्रकार के नवीन कार्य विधियों व उत्पादों को विकसित करता है।

(11) बदलती परिस्थितियों में तत्वों की व्याख्या और पुर्नव्याख्या सिखाता है।

(12) शोध पूर्वाग्रहों के निदान और निवारण में सहायक है।

(13) शोध जिज्ञासा मूल प्रवृत्ति की संतुष्टि करता है।

(14) शोध से व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास होता है।

(15) शोध पुर्वाग्रहों के निदान व निवारण में सहायक है।

उपसंहार

डॉ0 लाल ने मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से सर्वाधिक नाटक लिखे है। स्वांतत्रयोत्तर भारतीय परिस्थितियों में आए बदलावो को अब्दुल्ला दीवाना, सबरंग मोह भंग, राम की लड़ाई

सत्य हरिशचन्द, चतुर्भुज राक्षस, नरसिंह कथा जैसे नाटकों मे कथ्य के रूप में लिया गया। वास्तव में डॉ0 लाल ने अपने हर नाटक में शैली, शिल्प तथा कथ्य की दृष्टि से अभिमन्यु में पौराणिक अभिमन्यु के जीवन की त्रासदी के माध्यम से समकालीन विसंगत परिस्थितियों में जकड़े किकर्तव्यमूंठ मानव की व्यथा, विवशता को उजागर किया है। डॉ0 लाल ने लोकतत्वो का भरपूर प्रयोग किया है जैसे 'बलराम की तीर्थयात्रा' 'चतुर्भुज राक्षस' आदि डॉ0 लाल ने अपने नाटको में पात्रो का चुनाव जीवन के यथार्थ उठाए गए पात्र है। इसमें साधारण लोग भी है, अभावग्रस्त जिन्दगी जी रहे, आडम्बर ग्रस्त तथा दिखावा पसन्द व्यक्ति भी है डा0 लाल के नाटको का उद्धेश्य रचना की केन्द्रीय संवेदना को ध्यान में रखकर नाटक लिखना है।

डॉ0 लाल ने अपने नाटको में काव्यात्मकता, प्रतीकात्मकता, सांकेतिक कल्पनाशीलता का प्रयोग करते हुए रंगमंच पर एक जीवन्त, युगीन, और नाटकीय क्षमता से परिपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है।

संक्षेप मे कह सकते है कि डा0 लाल सफल नाटककार है क्योंकि वे एक साथ रंगमंच, कथ्य, अभिनेता और दर्शक को समभागी बनाकर रंगमंच की सार्थकता को व्यापक सन्दर्भ प्रदान करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सहायक ग्रन्थ सूची

(क) शोध ग्रन्थ के आधार ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ :–

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक :–

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, अंधा कुआँ, अम्बर प्रकाशन, करोल बाग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1955
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, अब्दुल्ला दीवाना, लिपि प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1973
3. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, एक सत्य हरिशचन्द्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण 1967
4. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कजरीवन, आरती प्रकाश संस, दिल्ली, 1980
5. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सूखा सरोवर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1971
6. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कर्फ्यू, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली संस्करण, 1972
7. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कलंकी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण, 1969
8. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गंगामाटी, पीताम्बर, बुक डिपो, दिल्ली संस्करण, 1977
9. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गुरू शिप्रा प्रकाशन, आगरा, 1974
10. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, चतुर्भुज राक्षस, पी.ए. मिश्रा, अजमेर 1976

11. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, दर्पण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली संस्करण 1966
12. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, नरसिंह कथा, मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
13. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, तोता मैना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962
14. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मादा कैक्टस, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975
15. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मिस्टर अभिमन्यु, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975
16. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, यक्ष प्रश्न, राजपाल एण्ड संस दिल्ली, 1976
17. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रक्तकमल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966
18. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रातरानी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1962
19. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, राम की लड़ाई, अम्बर प्रकाशन, दिल्ली, 1983
20. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सगुन पंक्षी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1977
21. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सबरंग मोहभंग, सरस्वती विहार, 1977
23. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, पंचपुरूष, लिपि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1978
24. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सूर्यमुख, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
25. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, बलराम की तीर्थयात्रा, नई दिल्ली, पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, द्वितीय संस्करण 1984

अन्य नाटककारों के नाटक

1. 'अब गरिबी ईटाओ : र्वाणी प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण, 2008
2. मणि मधुकर : इकतारे की आखँ सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण
3. सुशिल कुमार, सिहांसन खाली हैं। लिलि प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण
4. 'किस्सा कुर्सी का', अमृत नाहटा, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, द्वितीय दिल्ली, संस्करण, 1977
5. 'इला' प्रभाकर क्षोत्रिय, प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1989
6. आला अफसर, मुद्रा राक्षस, अक्षर प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1977
7. 'मरजीवा' मुद्रा राक्षस
8. 'दो व्यंग्य नाटक' (एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ), शरद जोशी राजकमल प्रकाशन, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1982
9. 'कहे ईसा सुने मूसा', विभु कुमार, ज्ञानभारती, रूपनगर, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1984
10. 'तालों में बंद प्रजातंत्र' विभु भास्कर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–1, प्रथम संस्करण, 1981
11. देश के लिए, सुदर्शन मजीठिया, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–2, संस्करण, 1990
12. 'प्रजा को रहने दो' गिरिराज किशोर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली, संस्करण, 1987

13. 'यमगाथा' दूधनाथसिंह, लोकभारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण,1979
14. 'युद्धमन' ब्रजमोहन शाह, इन्द्रप्रस्थ, प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1976
15. शतुरमुर्ग, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, भारतीय ज्ञानपीठ, द्वितीय नेताजी, सुभाष मार्ग, दिल्ली–6, संस्करण, 1972
16. 'सभ्य साँप' प्रियदर्शन प्रकाश, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1978
17. 'त्रिशंकु' ब्रजमोहन शाह, शब्दकार, तुर्कमान गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1975
18. 'काठ की तोप' गिरिराज किशोर, 'साक्षात्कार' पत्रिका में प्रकाशित जून, 1993 अंक 162
19. 'कथा एक कंस की' दया प्रकाश सिन्हा, अक्षर प्रकाशन, अंसारी रोड़, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1986
20. 'घोआस' काशीनाथ सिंह, प्रारूप प्रकाशन, 64 चौक गंगादास, इलाहाबाद
21. 'मुआवजे' भीष्मसाहनी, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड़, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1993
22. 'मन्त्रिमण्डल', भीष्म साहनी, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड़, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1993
23. 'घाटियाँ गूँजती है' शिवप्रसाद सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, तृतीय संस्करण 1965
24. 'चि....... की एक झालर', अमृतराय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, नवीन संस्करण, अगस्त, 1979

25. ‘मंत्रिमण्डल’ जितेन्द्र मित्तल, लिपि प्रकाशन, अंसारी रोड़, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1990
26. ‘मुआवजे’ भीष्म साहनी, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड़, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1993
27. ‘राज बलि की नई कथा’ रेवतीसरण शर्मा, विद्याप्रकाशन मन्दिर, प्रथम संस्करण, 1976
28. ‘शम्बूक की छाया’ नरेन्द्र कोहली, कल्पतरू, दिल्ली–32 संस्करण, 1989
29. छोटे सैयद बड़े सैयद, सुरेन्द्र वर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण, 1981
30. चेहरे चेहरे किसके चेहरे, गिरि राज किशोर, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1983
31. ‘नारद मोह’ सरजूप्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, 61 एफ, कमला नगर दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1977
32. ‘दिल्ली ऊँचा सुनती है’ कुसुम कुमार, सरस्वती विहार, शाहदरा, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982

सहायक ग्रन्थ

(क) सहायक आलोचनात्मक ग्रन्थ सूची

1. अमृतराय, आधुनिक भाव–बोध की संज्ञा, इलाहाबाद हंस प्रकाशन, 1972, प्रथम संस्करण
2. आधुनिक साहित्य बोध (एक परिसंवाद) कलकत्ता, श्री शिक्षायतन कॉलेज
3. अग्रवाल सुषमा, समकालीन, नाट्य साहित्य और मोहन राकेश के नाटक, इलाहाबाद, प्रथम प्रकाशन
4. अग्रवाल, विपिन कुमार, आधुनिकता के पहलू, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन, 1972, प्रथम संस्करण
5. कुमार कुसुम, हिन्दी नाट्य चिन्तन, दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, 1977, प्रथम संस्करण
6. केदारनाथ, (सं.) भरतमुनि नाट्यशास्त्र, वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, 1977, प्रथम संस्करण
7. ओझा दशरथ, आज का हिन्दी नाटक : प्रगति और प्रभाव, दिल्ली, राजपाल संस, 1984, प्रथम संस्करण
8. चन्द्रशेखर, हिन्दी नाटक और लक्ष्मीनारायण लाल की रंग यात्रा, दिल्ली, प्रवीण प्रकाशन, 1988 संस्करण
9. दुबे विजय कांत थर (सं.) साठोत्तरी हिन्दी नाटक, नई दिल्ली, नचिकेता प्रकाशन, 1993, प्रथम संस्करण
10. दीक्षित, दुर्गा, नाटक और नाट्य शैलियाँ, इलाहाबाद, साहित्य भवन, प्रा. लि. 1975, प्रथम संस्करण
11. अग्रवाल विपिन कुमार, आधुनिकता के पहलू, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन, 1972 प्रथम संस्करण

(ख) सहायक ग्रन्थ

1. समकालीन हिन्दी नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य – डॉ. सुधीर वाघ, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2009
2. हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
3. समकालीन हिन्दी नाटक की संघर्ष चेतना – डॉ. गिरीश रस्तोगी हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण, 1990
4. समकालीन हिन्दी नाटक (रचनात्मकता का सजग हस्तक्षेप)– डॉ. हर्षबाला शर्मा, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, 2010
5. हिन्दी नाटक : एक यात्रा दशक – डॉ. नरनारायण राय, भारती प्रकाशन, 1979
6. हिन्दी नाटकों में नैतिक चेतना का विकास – रत्नेश्‍र रामाश्रय, विद्या विहार, कानपुर।
7. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में शोषण के विभिन्न रूप – डॉ. सुरेश नामदेव तापड़े, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, 2009
8. हिन्दी साहित्य और स्वाधीनता संघर्ष–डॉ. धर्मपालल सरीन, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली
9. राष्ट्रीयता और हिन्दी नाटक – डॉ. विभुराम मिश्र, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1973
10. समकालीन ऐतिहासिक पौराणिक नाटक – बनवीर प्रसाद शर्मा, कृष्ण कान्ता भारद्वाज, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, 2010
11. साठोत्तर हिन्दी नाटक – के.वी. नारायण कुरूप, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, 2007
12. समकालीन हिन्दी नाटक सृष्टि और दृष्टि – लवकुमार लवलीन,

भावना प्रकाशन, दिल्ली, 1997
13. स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी नाटक – डॉ. रीता कुमार, विभु प्रकाशन, साहिबाबाद, 1980
14. मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक, डॉ. रमेश गौतम, नचिकेत प्रकाशन, दिल्ली, 1999
15. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच – नेमिचन्द्र जैन, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली, 1978
16. आधुनिक हिन्दी नाटक – बनवारी प्रसाद शर्मा, अनंग प्रकाशन दिल्ली, 2001
17. हिन्दी नाटक : आज तक – डॉ. वीणा गौतम, कबीर नगर, दिल्ली, 2002
18. आधुनिक नाटक और नाट्यकार – डॉ. रामकुमार गुप्त, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 1973
19. हिन्दी के प्रतीक नाटक – डॉ. गौतम रमेश, नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
20. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य – डॉ. सत्यनारायण शर्मा, श्याम प्रकाशन, जयपुर 2005
21. समकालीनता के अतीतोन्मुखी नाटक – रमेश गौतम, नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979
22. समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक – डॉ. शेखर शर्मा, भावना प्रकाशक, दिल्ली, 1988
23. स्त्रोत और सेतु – अज्ञेय, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1978
24. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सोलहवां संस्करण

25. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा, प्रकाशक रामनारायण लाल, चतुर्थ संस्करण, 1958
26. साहित्य के विविध आयाम – डॉ. सुधेश, नालन्दा प्रकाशन, महरौली, दिल्ली, संस्करण, 1983
27. साहित्य का श्रेय और प्रेम, जैनेन्द्र कुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, 1961
28. मानव मूल्य और साहित्य – डॉ. धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1960
29. साठोत्तर हिन्दी नाटककार – लवलीन कुमार लवलीन, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 1998
30. मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य– रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1984

पत्र–पत्रिकाएँ

1. समकालीन भारतीय साहित्य
2. आलोचना
3. इण्डिया टुडे
4. कथा प्रतिमान
5. साक्षात्कार
6. उत्तर
7. धर्मयुग
8. नटरंग
9. सम्मेलन पत्रिका
10. सरिता
11. साहित्य संदेश
12. हिन्दुस्तानी त्रैमासिक
13. संचेतना
14. दैनिक जागरण
15. दैनिक भास्कर
16. कादम्बिनी
17. मधुपती
18. धर्मयुग
19. कथा देश
20. आजकल